

हरिकथामृथसार
गुण तारतम्य संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पेळुवे
परम भगवधभक्थरिधनाधरधि केळुवुधु

श्रीधरा दुगामनोरम
वैधमुक सुमनसगण समा
राधित पदांभोज जगदंतबहिव्याप्त
गोधर फणिवरातपत्र नि
शोधदूर विचित्र कम सु
बोध सुखमय गात्र परमपवित्र सुचरित्र २०-०१

नित्य निमल निगमवेद्यो
त्पत्ति स्थितिलय दोषविवजित
स्तुत्य पूज्य प्रसिद्ध मुक्तामुक्तगणसेव्य
सत्यकाम शरण्य शाश्वत
भ्रुथ्यवथ्सल भयनिवारण
अत्यधिक संप्रियतम जगन्नाथ मां पाहि २०-०२

परम पुरुषन रूपगुणवनु
सरिसि कांबळु प्रवहदंददि
निरुपमळु निदुःखसुख सुखसंपूणळेनिसुवळु
हरिगे धामत्रयवेनिसि आ
भरणवसनायुधगळागि
हरिगळनु संहरिसुवळु अअरळेनिसिकोंडु २०-०३

ईतगिंतानंतगुणदलि
श्रीतरुणि ता कडिमेयेनिपळु
नित्य मुक्तळु निविकारळु त्रिगुणवजितळु
धौत पाप विरिचिपवनर

मातेयेनिप महालकुमि वि
ख्यातळागिहळेळ्ळ कालदि श्रुथिपुराणधोळु २०-०४

कमलसंभव पवनरीवरु
समरु समवतिगळु रुद्रा
द्यमरगण संसेविता परब्रह्म नामकरु
यमळरिगे महालकुमि तानु
त्तमळु कौटि सजाति गुणादिं
दमित सुविजात्यधमरेनिपरु ब्रह्मवायुगळु २०-०५

पतिगळिंद सरस्वती भा
रतिगळधमरु नूरुगुण परि
मित विजात्यवररु बलज्झन्यानादि गुणादिंद
अतिशयळु वाग्देवि श्री भा
रतिगे पदद प्रयुक्त विधि मा
रुतरवोल् चिंतिपुदु सद्भक्तियलि कौविदरु २०-०६

खगप फणिपति मृदरु सम वा
णिगे श्थगुणाधमरु मूव
मिगिलेनिसुवनु शेष पददिंदलि त्रियंबकगे
नगधरन षण्महिषियरु प
न्नगविभूषणगैदु मेनके
मगळु वारुणि सौपरणिगळिगधिकवेरडु गुण २०-०७

गरुड शेष महेशरिगे सौ
परणि वारुणि पावतियु मू
वरु दशाधमरु वारुणिगे कडिमेयेनिसुवळु गौरी
हरन मडदिगे हतु गुणदलि
सुरपकामरु कडिमे इंद्रगे
कोरतेयेनिसुव मन्मथनु पददिंदलावाग २०-०८

ईरयिदु गुण कडिमेया हं
कारिक प्राणनु मनोज न
गारिगळिगनिरुद्ध रति मनु दअ गुरु शचियु
आरु जन सम प्राणनिंदलि
हौरगे एनिपरु हत्तु गुणदलि
मरजाद्यरिगैदु गुणदिंदधम प्रवहाख्य २०-०९

गुणद्वयदिं कडिमे प्रवहगे
इन शशांक यम स्वयंभुव
मनुमडदि शतरूप नाल्वरु पादपादाध
वनधि नीच पदाध नारद
मुनिगे बृग्वग्नि प्रसूतिग
ळेनिसुवरु पादाध गुणदिंधमेरहुदेंदु २०-१०

हुतवहगे द्विगुणाधमरु विधि
सुत मरीच्यादिगळु वैव
स्वतनु विश्वामित्ररिगे किंचिद्गुणाधमरु
व्रतिवर जगन्मित्रवर निर
ऋथि प्रावहि ताररिगे किं
चित् गुणाधम धनप विष्वक्सेनरेनिसुवनु २०-११

धनप विष्वक्सेन गौरी
तनयरिगे उक्तेतररु सम
रेनिसुवरु एंभत्तैदु जन शेषशतरेंदु
दिनपरारेळधिक नाल्व
त्तनिलरेळवसुरुद्र रीरै
दनितु विश्वेदेव ऋभुवश्चिनि ध्यावापृठिवि २०-१२

इवरिगिंतलि कोरतेयेनिपरु
चवन सनकादिगळु पावक
कवि उचिथ्य जयंत कश्यप मनुगळेकादश

धृव नहुष शशिबिंदु हैहय
दवुषयंति वीरोचनन निज
कुवर बलि मोदलाद सप्तैद्रु ककुस्थगय २०-१३

पृथु भरत मांधात प्रीय
व्रुत मरुत प्रह्लाद सुपरि
इत हरिश्रंद्रांबरीषोत्तानपाद मुख
शत सुपुण्यश्लोकुरु गदा
भृथगधिष्ठानरु सुप्रिय
व्रतगे द्विगुणाधमरु कमजरेंदु करेसुवरु २०-१४

नळिनि सम्ज्झन्या रोहिणी शामल विरात् पजन्यरढमरु
एलरमिथ्रन मदधि ध्विगुणाढमळु भाम्बोळगे
जलमयबुढाढमनु ध्विगुणधि केळगेनिसुवरुषा
शनैश्वर रिळेय ईरु गुणाढमळुषाधेवि धेशेयिम्ध २०-१५

एरदु गुणकमाढिपथि पुष्कर कदिमेयाजाना
धिविजरु चिरपिथृगळिम्धुथ्थमरु किम्कररु पुष्करगे
सुरपनालय गायकोथ्थम रेरदयिधु गुणधिम्ढम
थुम्बुरगे सम सथकोति ऋषिगळु नूरु जनरुळिधु २०-१६

अवरवर पथिनियरु अप्सर यवथियरु सम उथ्थमरनुळि
धवररेनिपरु मनुजगम्ढवरु ध्विषदुणधि
कुवलयाढिपरीरयिधु गुण अवनिपस्थ्रीयरु धशोथ्थर
नवथिगुणधिम्धढमरेनिपरु मानुषोथ्थमरु २०-१७

सथ्थवसथ्थवरु सथ्थवराजस सथ्थवथामस मूरु
रजस्सथ्थवरढिकारिगळु भगवध्भक्थरेनिसुवरु
निथ्यबध्ढरु रजोरजरुथ्थिथि बूस्वगधोळु नरकधि
पृठ्वियोळु सम्चरिसुथिप्परु रजस्थामसरु २०-१८

तमस्सात्त्विकरेनिसिकोंबरु
अमितनाख्यातासुररगणविदे
तमोराजसरेनिसिकोंबरु दैत्य समुदाय
तमस्तामस कलि पुरंध्रियु
अमित दुगणपूण सवा
धमरोळधमाधम दुरात्मनु कलियेनिसिकोंब २०-१९

इवन पौलुव पापि जीवरु
भुवन मूररोळिल्ल नौडलु
नवविध द्वेषगळिगाकरनेनिसिकोळुतिप्प
बवरदोळु बंगारदोळु नट
युवति द्यूतापेय मूषदोळु
कविसि मोहदि केडिसुवनु एंदरिदु त्यजिसुवुदु २०-२०

त्रिविधजीव प्रततिगळ स
ग्गवोळैयाणमालयनु निमिसि
युवतियर ओडगूडि क्रीडिसुवनु कृपासांद्र
दिवज दानव तारतंयद
विवर तिळिव महात्मरिगे बा
न्नविरसख तानोलिदु उद्धरिसुवनु भरदिंद २०-२१

दैवदैत्यर तारतंयवु
पावमानि मतानुगारिगिदु
कैवलावश्यकवु तिळिवुदु सवकालदलि
दावशिखि पापाटविके नव
नावेयेनिपुदु भवसमुद्रके
पावटिगे वैकुंठ लोककिदेंदु करेसुवुदु २०-२२

तारतम्य ज्झन्यान मुक्ति
द्वारवेनिपुदु भक्तजनरिगे
तौरि पेळि सुखाब्धियोळु लौलाडुवुदु बुधरु

क्रूर मानवरिगिदु कणक
ठोरवेनिपुदु नित्यदलि अधि
कारिगळिगिदनरुपुवुदु दुस्तकिगळ बिट्टु २०-२३

हरि सिरि विरिचीरभारति
गरुड फणिपति शण्महिषियरु
गिरिज नाकेश स्मर प्राणानिरुद्ध शचि
गुरु रती मनु दअ प्रवहा
मरुत मानवि यम शशि दिवा
कर वरुण नारद सुरास्य प्रसूति भृगमुनिप २०-२४

व्रथथिजासन पुथ्रेनिसुव व्रथिवरमरीच्यथि
वैवस्वथनु थारामिथनिऋऋथि प्रवहमारुथन
सथि ढनेशाश्वनिगळिगण पथियु विश्वक्सेन शेषसु
शथरु मनुगळुचठ्यच्यावनमुनिगळिगे नमिपे २०-२५

शतसुपुण्य श्लोकरेनिसुव
इतिपरिगे नमिसुवेनु भागी
रथि विराट् पजन्य रोहिणि शामला संज्झन्या
हुतवहन महिळा बुधोषा
इति शनैश्वर पुष्कररिगा
नतिसि बिन्नैविसुवेनु भक्ति ज्झन्यान कोडलेंदु २०-२६

नूरधिकवागिप्प मत्थदि
नारु साविर नंदगोपकु
मारनधांगियरगस्त्याधिक मुनीश्वररु
ऊवशिये मोदलाद अप्सर
नारियरु शत तुंबुररु कं
सारिगुणगळ कीतनेय माडिसलि एन्निद २०-२७

पावनरु शुचि शुद्ध नामक

धेवतेगळाजान चिरपितृ
देव नरगंधवरवनिप मानुषोत्तमरु
ई वसुमतियोळुळळ वैष्णव
रावळियोळिहरैदु नित्यदि
सेविपुदु संतोषदिं सवप्रकारदलि २०-२८

मानुषोत्तमरनु पिडिदु चतु
राननांत शतोत्तमत्व क्र
मेण चिंतिप भक्तरिगे चतुरविधपुरुषाथ
श्रीनिधि जगन्नाथविट्टल
ताने ओलिदीवनु निरंतर
सानुरागादि पठिसुवुदु प्राज्झन्यरिद मरेयदले २०-२९